आपकी टिप्पणियाँ

315hi25

25

शीतयुद्ध युग और इसकी राजनीति

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, इस युद्ध के मित्र राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस के बीच शीत युद्ध प्रारंभ हो गया। युद्ध के दौरान ये दोनों राष्ट्रों जर्मनी एवं इटली की फासीवादी तानाशाही और जापान के साम्राज्य को हराने के लिए ब्रिटेन और फ्रांस के साथ एक ही ओर से लड़ रहे थे। दोनों देशों ने 1941 में पांच वर्षीय अनाक्रमण–संधि पर हस्ताक्षर भी किए थे। यहाँ तक कि फरवरी 1945 में हुए याल्टा सम्मेलन तक दोनों देशों के बीच कुछ सौहार्द कायम था। लेकिन जल्दी ही परिस्थिति पूर्णतः बदल गई और संयुक्त राज्य अमेरिका तथा सोवियत संघ दोनों एक–दूसरे के सामने 'युद्ध जैसी स्थिति' में खड़े हो गए, जिसे सामान्यतः शीतयुद्ध कहा जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप:

- शीतयुद्ध का अर्थ बता सकेंगे;
- शीतयुद्ध के लिए जिम्मेदार कारकों का वर्णन कर सकेंगे;
- संघर्ष के विभिन्न मुद्दों का उल्लेख कर सकेंगे; और
- शीतयुद्ध की नए शीतयुद्ध से तुलना कर सकेंगे।

25.1 शीतयुद्ध का अर्थ

शीतयुद्ध को नई महाशक्तियों के बीच 'शांतिकाल में बिना हथियारों के चलने वाले युद्ध' के रूप में वर्णित किया जाता है। यह महाशक्तियों के बीच 'कूटनीतिक युद्ध' या हथियारबंद लड़ाई नहीं, बल्कि यह वैचारिक घृणा और राजनीतिक अविश्वास पर आधारित था। फ्लेमिंग के अनुसार 'शीतयुद्ध एक ऐसा युद्ध है, जो युद्ध–क्षेत्र में नहीं लड़ा जाता, अपितु लोगों के दिमाग में चलता है, इसमें एक व्यक्ति दूसरे के दिमाग को नियंत्रित करने की कोशिश करता है। शीतयुद्ध खुले युद्ध से बहुत भिन्न होता था, क्योंकि खुले युद्ध में शत्रुओं को पूर्ण जानकारी होती है और युद्ध खुले मैदान में लड़ा जाता है। शीतयुद्ध में कभी युद्ध की घोषणा नहीं की गई और देशों के बीच कूटनीतिक संबंध कायम रखे गए। शीतयुद्ध में सैनिक टकराव और जीवन–हानि भी हुई, लेकिन वह एक

मनोवैज्ञानिक युद्ध भी था, जिसका उद्देश्य दुश्मन के प्रभाव क्षेत्र को कम करना और अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाना था।

शीतयुद्ध संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के बीच द्विध्रुवीय टकराव था, लेकिन उसमें मित्र राष्ट्र और दोनों महाशक्तियों के सहयोगी और अधीनस्थ राष्ट्र भी शामिल थे। शीतयुद्ध को दो विचारधाराओं और दो अलग–अलग ढंग से संगठित अर्थव्यवस्था प्रणालियों एवं सामाजिक साम्यवाद और उदार प्रजातंत्र तथा समाजवादी नियंत्रित अर्थव्यवस्था तथा पूंजीवाद के बीच विरोध के रूप में भी समझा गया है। यद्यपि इतिहास में अनेक द्विध्रुवीय विरोध देखने को मिलते हैं, लेकिन यह पहला अवसर था, जब दो भिन्न–भिन्न स्वरूपों वाले सामाजिक संगठन विश्व के वैकल्पिक दृष्टिकोण लागू करने की होड़ में लगे थे।

बीसवीं सदी के प्रारंभ से ही संयुक्त राज्य अमेरिका एवं सोवियत संघ दोनों ही महाशक्तियां बनने की ओर अग्रसर थे। महामंदी के तुरंत बाद 1932 में विनिर्माण में जुटे विभिन्न देशों के अंश का तुलनात्मक अध्ययन दर्शाता है कि अमेरिका लगभग 32 प्रतिशत अंश के साथ निर्विवाद नेता था और रूस 11.5 प्रतिशत अंश के साथ दूसरे स्थान पर। लेकिन अन्य अग्रणी देश ब्रिटेन 10.9 प्रतिशत, जर्मनी 10.6 प्रतिशत, फ्रांस 16.9 भी ज्यादा पीछे नहीं थे। किंतु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मनी और जापान की सैन्य शक्ति पराजित हो गई और ब्रिटेन तथा फ्रांस बुरी तरह पस्त हो गए। अब दो देश ही ऐसे बचे जो महाशक्ति बनकर उभरे–अमेरिका और रूस। युद्ध के दौरान भारी क्षति होने के बावजूद सोवियत संघ ने अपनी साम्यवादी अर्थव्यवस्था के कारण तेजी से प्रगति की। इन दोनों राष्ट्रों की तेजी से हो रही उन्नति के परिणामस्वरूप दोनों के बीच प्रतिद्वंद्विता बढ़ गई, जिससे शीतयुद्ध प्रारंभ हो गया।

सोवियत संघ ने कॉमिनफॉर्म (कम्युनिस्ट सूचना ब्यूरो), रेडियो मॉस्को की स्थापना की और कुछ अन्य देशों में भी कुछ कम्युनिस्ट दलों का समर्थन किया। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने 'वॉयस ऑफ अमेरिका' नामक रेडियो न्यूज कार्यक्रम प्रारंभ किया और अन्य देशों में कम्युनिस्ट–विरोधी राजनीतिक दलों एवं आंदोलनों का समर्थन किया।

इन दोनों देशों के बीच के विरोध ने इनके द्वारा अपनाई गई विचारधाराओं के बीच विरोध का रूप ले लिया। इनमें से एक विचारधारा थी राजनीतिक एवं आर्थिक उदारवाद, जिसे अमेरिका ने अपनाया और दूसरी थी मार्क्सवाद–लेनिनवाद, जिसे रूस ने अपनाया।

पाठगत प्रश्न 25.1

1. शीतयुद्ध में किन दो विचारधाराओं में टकराव था?

2. अमेरिका तथा रूस द्वारा कौन–कौन सी समाचार सेवाओं की स्थापना की गई?

आपकी टिप्पणियाँ

25.2 शीतयुद्ध के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारक

दूसरे विश्व युद्ध के बाद अमेरिका और रूस दोनों नई महाशक्तियों अपनी–अपनी स्थिति एवं विचारधारा का वर्चस्व स्थापित करना चाहती थीं और यही संघर्ष अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का केंद्र–बिंदु बन गया। विरोधी धड़े बनने लगे, जिससे इन महाशक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता और बढ़ने लगी। अधिकांश पश्चिमी देश अमेरिका के समर्थन में खड़े हो गए और साम्यवाद का खुलकर विरोध करने लगे। परमाणु हथियार बनाने के बाद अमेरिका को महाशक्ति का दर्जा प्राप्त हो गया। रूस बहुत जल्दी ही अमेरिका की स्थिति को चुनौती देनेवाला प्रतिद्वंद्वी बनकर उभरा और 1949 में उसने भी परमाणु हथियार बनाकर अमेरिका के वर्चस्व को समाप्त कर दिया।

सोवियत संघ एवं पश्चिमी देशों के बीच लंबे समय तक संदेह और अविश्वास का दौर चलता रहा। सोवियत संघ यह कभी नहीं भूल सका कि पश्चिमी देशों (ब्रिटेन, फ्रांस एवं अमेरिका) ने बोल्शेविक क्रांति को विफल करने की कोशिश की थी और (जापान के साथ) गृहयुद्ध में हस्तक्षेप किया था। पश्चिमी देश भी यह नहीं भूल पाए कि सोवियत संघ का घोषित उद्देश्य समूचे विश्व से पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना था। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान आपसी संदेह और बढ़ गया। 1941 में जब जर्मनी ने सोवियत संघ पर आक्रमण किया तो पश्चिमी गणतंत्रों ने जर्मन के खिलाफ दूसरा मोर्चा खोलने में देर लगाई। ब्रिटेन एवं अमेरिका ने ऐसा करने का वायदा किया था, लेकिन इसमें हुए विलंब ने रूस का यह संदेह पक्का कर दिया कि पश्चिमी देश जर्मनी एवं रूस के बीच लंबी अवधि तक लड़ाई जारी रहने देना चाहते हैं ताकि दोनों का सफाया हो सके।

युद्ध के दौरान, दोनों पक्ष धुरी शक्तियों (जर्मनी, इटली और कुछ अन्य छोटे–छोटे राष्ट्र) से मुक्त हुए देशों में विरोधी तत्वों को प्रोत्साहित करने लगे। जब इटली से फासीवाद तानाशाह मुसोलिनी को सत्ता से हटा दिया गया, तब पश्चिमी शक्तियों ने इटली को समर्थन दिया और इसे पुनर्निर्माण के लिए सहायता (सैकड़ों मिलियन अमेरिकी डॉलर की सहायता राशि) दी। चूंकि रूस से बाहर इटली में सबसे अधिक साम्यवादी दल थे, अतः अमेरिका ने इसे पूंजीवादी खेमे अथवा देशों के धड़े को मजबूत करने के प्रयास के रूप में देखा। ऐसी ही समस्याएँ ग्रीस और पोलैंड में भी थीं। अमेरिका ने ग्रीस में साम्यवादी शक्तियों को हराने में मदद की। 1945 के बाद, दोनों महाशक्तियों ने आपसी संदेह को कम करने के लिए कुछ कदम उठाए। अमेरिका में केवल जर्मनी के पश्चिमी क्षेत्रों और ऑस्ट्रिया पर कब्जा रखने और पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया एवं अन्य पूर्वी यूरोपीय क्षेत्रों से बाहर रहने पर सहमत हो गया, जिन्हें सोवियत लाल सेना में स्वतंत्र कराया था। सोवियत संघ ने कोमिनफॉर्म (कम्युनिस्ट सूचना ब्यूरो) भंग कर दी और पूंजीवादी शक्तियों को ग्रीस पर नियंत्रण करने दिया। सोवियत संघ 1952 में फिनलैंड से हट गया और 1955 तक ऑस्ट्रिया से अपनी पूरी सेना वापस बुला ली। यूरोप एवं अन्य क्षेत्रों के भविष्य को लेकर अमेरिका तथा रूस के बीच मतभेद बने रहे। सोवियत संघ नाजी जर्मनी से स्वतंत्र कराए गए पूर्वी यूरोपियन देशों में मित्र सरकारें स्थापित करवाना चाहता था। यहाँ मित्र सरकारों से सोवियत संघ का अर्थ था साम्यवादी सरकारें, जो अमेरिका और ब्रिटेन को मंजूर नहीं थीं। सोवियत संघ ने टर्की में भी अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया और ईरान से अपनी फौज वापस बुलाने में देरी की, जो पश्चिमी देशों को नागवार गुजरा।

शीतयुद्ध के लिए दोनों ही पक्ष जिम्मेवार थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान दोनों पक्षों के बीच अस्थायी युद्ध विराम युद्ध के पूर्व और पश्चात् उनके बीच के तनावपूर्ण संबंधों में एक पैबंद मात्र था।

पाठगत प्रश्न 25.2

1. कौन से देश धुरी शक्तियों के अंग थे?

2. कौन से देश मित्र शक्तियों के अंग थे?

3. यूरोप के कौन से क्षेत्र अमेरिका तथा रूस से प्रभावित थे?

25.3 शीतयुद्ध के विभिन्न चरण

चूंकि शीतयुद्ध की कभी घोषणा नहीं की गई थी और यह अघोषित युद्ध भी दीर्घकालिक किस्म का था, अतः इसके प्रारंभ होने की सही तारीख बता पाना बहुत कठिन है। प्रारंभिक चरण (1945–47) जिसे अस्थिविकास चरण कहा जाता है, के बाद शीतयुद्ध में तेजी आई, जिसके केंद्र में था युद्ध के बाद यूरोप की व्यवस्था का निर्माण। शीतयुद्ध के प्रारंभ ने विभिन्न शक्तियों द्वारा याल्टा और पोट्सडम में युद्धकालीन सम्मेलनों में स्वीकृत सिद्धांतों का सतत सम्मान करने में विफलता प्रतिबिंबित की।

प्रथम चरण

प्रारंभिक चरण में पोलैंड का हश्र एक नाजुक प्रश्न बन गया। पोलैंड में सभी देशों की विशेष रूचि थी। जब सितंबर 1939 में हिटलर की सेना ने पोलैंड की सीमा पार कर ली तो फ्रांस एवं ब्रिटेन ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध घोषित कर दिया था। रूस के लिए पोलैंड एक ऐतिहासिक शत्रु था, तो दूसरी ओर पश्चिम की ओर से रूस पर चढ़ाई करने के लिए पोलैंड की भूमि परंपरागत प्रवेश–द्वार थी। जब 1944 में सोवियत संघ ने पोलैंड में प्रवेश किया, तब उन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता की समर्थक साम्यवादी राष्ट्रीय मुक्ति समिति समर्थक लुबलिन सरकार को औपचारिक रूप से सत्ता सौंप दी। पोलैंड के भविष्य पर स्टालिन, चर्चिल और रूजवैल्ट के याल्टा सम्मेलन में विस्तृत चर्चा हुई। पोलैंड की सटीक सीमा के संबंध में कोई समझौता नहीं हो सका। लेकिन पोलैंड अंततः सोवियत खेमे में आ गया। पोलैंड का सोवियतीकरण शीतयुद्ध के प्रारंभ सीमाचिह्न बन गया।

टकराव दूसरा मुख्य क्षेत्र था। बलकान ब्रिटेन एवं सोवियत संघ दोनों ने बलकान इलाके में अपने–अपने प्रभाव क्षेत्र बनाने का निश्चय किया। लेकिन ग्रीस को छोड़कर सभी देशों में साम्यवादी सरकार बना दी गई और एक बार जब साम्यवादी शासन लागू हो गया तो सोवियत संघ ने उन्हें खुला समर्थन देना प्रारंभ कर दिया। ग्रीस को छोड़कर, जो ब्रिटेन के नियंत्रण में आ गया, अन्य सभी पूर्वी यूरोपीय देशों पर सोवियत संघ का प्रभुत्व स्थापित

आपकी टिप्पणियाँ

हो गया। चर्चिल ने इस स्थिति का प्रतिपादन इस प्रकार किया कि यूरोप के ऊपर एक 'लोहे का आवरण' छा गया है। इससे पूर्व एवं पश्चिम के रिश्तों में भारी खटास आ गई, जिसमें अमेरिका एवं सोवियत संघ भी शामिल थे।

मित्र राष्ट्रों की सेनाओं के आगे बिना शर्त समर्पण के बाद जर्मनी को चार अधिग्रहण–क्षेत्रों में विभक्त कर दिया गया, जिनमें से प्रत्येक भाग पर सोवियत संघ, अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस का नियंत्रण था। जर्मनी की राजधानी बर्लिन सोवियत अधिग्रहण–क्षेत्र में थी, लेकिन जर्मनी की तर्ज पर अधिग्रहण क्षेत्रों में बर्लिन स्वयं पूरी बंटी थी। सैन्य कब्जा शांति समझौता संपन्न होने तक चलने वाली एक अस्थायी व्यवस्था थी। शांति–समझौता संपन्न हो गया। जर्मनी के साथ शांति–समझौता करने के लिए पोट्सडम सम्मेलन बुलाया गया। महत्त्वपूर्ण विषयों पर मित्र राष्ट्रों की राय स्पष्ट न थी, जैसे क्या जर्मनी को शस्त्र–विहीन कर दिया जाए, सेनाविहीन किया जाए या उसका विभाजन कर दिया जाए। जर्मनी के उद्योगों का किस सीमा तक पुनर्निर्माण किया जाए? सोवियत संघ एक कंगाल और कमजोर जर्मनी चाहता था ताकि जर्मनी द्वारा उसके हितों के लिए खतरा न बन सके। सोवियत संघ ने जर्मनी से क्षतिपूर्ति के रूप में 20 बिलियन अमेरिकी जर्मन की भी मांग की। लेकिन पश्चिनी मित्र राष्ट्र इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हुए। बाद में ब्रिटिश, अमेरिकी और फ्रांसीसी अधिकार वाले क्षेत्रों का एकीकरण कर दिया गया और इस तरह जर्मन संघीय गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी) अस्तित्व में आया। नए राज्य में चुनाव के बाद एक पश्चिम–समर्थक सरकार सत्ता में आई। उसे अमेरिका से भारी मात्र में वित्तीय सहायता प्राप्त होने लगी। जल्दी ही सोवियत संघ की मदद से दूसरा क्षेत्र भी राज्य बन गया, जो जर्मन प्रजातांत्रिक गणराज्य (पूर्वी जर्मनी) कहलाया।

पश्चिमी देश जर्मनी में मौद्रिक सुधार लाना चाहते थे, लेकिन सोवियत संघ ने अपना जवाब बर्लिन–नाकाबंदी के रूप में दिया। सोवियत संघ ने बर्लिन एवं पश्चिमी क्षेत्रों के बीच सभी प्रकार के यातायात पर प्रतिबंध लगा दिया, चाहे वह सड़क–मार्ग हो रेल मार्ग या फिर जलमार्ग। यह नाकाबंदी ब्रसेल्स संधि के विरोध में भी थी, जिसे ब्रिटेन, फ्रांस और बेल्जियम के बीच आपसी रक्षा संधि के रूप में प्रतिपादित किया गया था। इस संधि में हस्ताक्षरकर्ताओं को ये निर्देश दिए गए थे कि जर्मनी अथवा यूरोप के किसी अन्य हमला किए जाने की स्थिति में वे हर सदस्य राष्ट्र को सैन्य सहायता उपलब्ध कराएंगे। यद्यपि उसके मूल पाठ में सोवियत संघ के नाम का उल्लेख नहीं किया गया था, फिर भी उसका मुख्य लक्ष्य जर्मनी न होकर सोवियत संघ ही था।

जब मार्च 1946 तक सोवियत सेना ईरान से वापस नहीं हुई तो एक संकट पैदा हो गया। युद्ध के दौरान ईरान सोवियत संघ तक पश्चिमी सहायता पहुंचाने का एक आम मार्ग था। ईरान में तेल भी प्रचुर मात्रा में था। सोवियत संघ ने ईरान के तेल पर पैठ बनाने का विशेषाधिकार मांगा और सोवियत संघ के कब्जे वाले क्षेत्रों में ईरान की सेना को प्रवेश की अनुमति नहीं दी। तब अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सोवियत संघ की सेनाओं द्वारा ईरान छोड़ने के लिए दबाव बनाया।

मानचित्र 25.1 महाशक्तियों के मध्य टकराव – 1950

शीतयुद्ध का युग तथा इसकी राजनीति

टर्की में सोवियत संघ ने बोसपोरम जलडमरूमध्य के अंतर्राष्ट्रीयकरण की मांग की। पश्चिमी मित्र–राष्ट्रों ने इसका विरोध किया। ग्रीस में अमेरिका तथा सोवियत संघ ने विरोधी ताकतों को समर्थन दिया। ग्रीस की रूढ़िवादी ताकतों ने अमेरिका से मदद की भी मांग की थी।

इसी पृष्ठभूमि में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रूमैन ने अपनी एक नीति प्रतिपादित की, जिसे **ट्रूमैन सिद्धांत** के नाम से जाना जाता है। ट्रूमैन का सिद्धांत 'अवरोध' पर आधारित था अर्थात् साम्यवाद को उन क्षेत्रों तक सीमित या अवरुद्ध करना, जिन्हें वह पहले ही जीत चुका है, और उसे और आगे न बढ़ने देना। इस प्रकार, अमेरिका की विदेश नीति अलगाववाद से बदलकर हस्तक्षेपवादी की हो गई। इस हस्तक्षेप का उद्देश्य था विश्व में कहीं पर भी साम्यवाद के विस्तार को रोकना।

कुछ पश्चिमी यूरोपीय देशों में भी साम्यवाद काफी तेजी से बढ़ा। यूरोप के युद्ध से जर्जर देशों को युद्ध के बाद अनेक सुधारों की आशा थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। यूरोप की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाएँ तथा उद्योग चरमरा रहे थे और इन देशों में साम्यवादी दलों की संख्या निरंतर बढ़ रही थी। इसी पृष्ठभूमि में अमेरिका के राज्य सचिव मार्शल ने यूरोप के आर्थिक पुनर्निर्माण की योजना पेश की, जिसे **मार्शल योजना** के नाम से जाना जाता है। इस योजना में 20 वर्षों की अवधि में अमेरिका द्वारा 10 बिलियन डॉलर से अधिक की राशि यूरोप को दिए जाने की बात कही गई थी। यह आशा की गई कि इतने बड़े धन से यूरोप युद्ध में हुई क्षति की भरपाई कर सकेगा और इस प्रकार अपनी भौतिक एवं राजनीतिक दशा सुधार पाएगा। यह भी माना गया कि स्थिर यूरोप ही आंतरिक एवं बाह्य साम्यवाद की चुनौतियों का सामना कर सकेगा। महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि सहायता का प्रस्ताव पूर्वी यूरोपियन देशों के सामने भी रखा गया था। ट्रूमैन सिद्धांत एवं मार्शल योजना के जवाब में सोवियत संघ ने अपनी ओर से कॉमिनफॉर्म (साम्यवादी सूचना ब्यूरो) को पुनर्जीवित कर दिया। उसकी स्थापना सोवियत प्रभाव क्षेत्र वाली सभी साम्यवादी सरकारों को मॉस्को की नीतियों के अनुरूप बनाए जाने के लिए की गई थी। इस प्रकार यह यूरोप में साम्यवाद को और मजबूत करने का प्रयास था। 4 अप्रैल, 1949 को उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन अर्थात् नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी आर्गनाइजेशन (नाटो) पर हस्ताक्षर किए गए। यह संधि 'अवरोध' की नीति के अनुसरण में हस्ताक्षरित की गई। यह संधि अमेरिका और अन्य यूरोपीय देशों ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, आइसलैंड, इटली, नीदरलैंड, लक्जेमबर्ग, नार्वे और पुर्तगाल के बीच हुई। यह संधि सोवियत ब्लॉक के खिलाफ एक सैन्य गठजोड़ था। नाटो संधि का अनुच्छेद–V केंद्रीय उपबंध है, जिसके अनुसार नाटो के किसी भी सदस्य पर हुए आक्रमण को अन्य सभी सदस्य देशों पर आक्रमण समझा जाएगा। फिर भी प्रत्येक सदस्य राष्ट्र को यह तय करने का अधिकार था कि वह अन्य सदस्य राष्ट्रों को किस प्रकार की सहायता प्रदान करना चाहता है। बाद में ग्रीस एवं जर्मनी भी नाटो के सदस्य बन गए।

चीन तथा कोरिया में 1945 के बाद हुई गतिविधियों से और सघन हो गया। शीतयुद्ध में चीन 1949 में माउत्से तुंग के नेतृत्व में साम्यवादियों को सत्ता मिल गई और चीनी लोकतांत्रिक गणतंत्र की स्थापना हुई। संयुक्त राज्य अमेरिका ने चीनी लोकतांत्रिक गणतंत्र को मान्यता देने से इंकार कर दिया। उसे संयुक्त राष्ट्र में प्रवेश भी नहीं दिया गया, केवल ताइवान (राष्ट्रवादी चीन) को ही मान्यता दी गई। अमेरिका ने चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ से बाहर रखने के लिए अपनी वीटो शक्ति का प्रयोग किया और रूस ने संयुक्त राष्ट्र संघ का कारगार ढंग से बहिष्कार कर दिया। फिर भी इसका मतलब यह नहीं निकाला जाना चाहिए कि सोवियत संघ एवं चीन के बीच मित्रता स्थापित हो गई। 1950 के बाद इनके संबंध बिगड़ने लगे।

द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान की हार के बाद कोरिया, उत्तरी और दक्षिणी दो भागों में बंट गया। पोट्सडम सम्मेलन के अनुसार उत्तरी कोरिया सोवियत संघ के नियंत्रण में और दक्षिण कोरिया अमेरिका के नियंत्रण में आया। दक्षिणी कोरिया में एक कारगर तानाशाही व्यवस्था स्थापित हुई, जिसे अमेरिका का सीधा समर्थन हासिल था। उत्तरी कोरिया में सोवियत संघ समर्थक सरकार स्थापित हुई। न तो सोवियत संघ ने और न ही अमेरिका ने अपने विरोध वाली सरकार को मान्यता दी। 1950 में उत्तरी कोरिया ने दक्षिण कोरिया पर आक्रमण कर दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ, ने जिसकी स्थायी सुरक्षा परिषद में पूंजीवादी राष्ट्रों का दबदबा था, उत्तरी कोरिया को आक्रमणकारी घोषित कर दिया और उत्तरी कोरिया के आक्रमण का जवाब देने के लिए एक संयुक्त कमान का गठन किया। अमेरिका के जनरल को इसका कमांडर बनाया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ की सेनाओं ने उत्तरी कोरिया की सेना को दक्षिण कोरिया से खदेड़ दिया और उत्तरी कोरिया की सीमा में काफी अंदर चीन की सीमा तक घुस गई। तब संयुक्त राष्ट्र संघ की सेनाओं को दक्षिण कोरिया में धकेलने के लिए चीन ने उत्तरी कोरिया का साथ देना शुरू कर दिया। अंततः 1953 में एक युद्ध–विराम पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे एक खुले युद्ध का खतरा टल गया। कोरिया का संकट शीतयुद्ध का पहला सैन्य संघर्ष था। सोवियत संघ और अमेरिका तथा चीन एक दूसरे के साथ ज्यादा सीधी लड़ाई में शामिल नहीं हुए। (यद्यपि उत्तरी कोरिया के हवाई जहाजों को वास्तव में सोवियत संघ के पायलट उड़ा रहे थे) लेकिन वे एक–दूसरे पर आश्रित शक्तियों (कोरियाई गणतंत्र और कोरियाई प्रजातांत्रिक गणराज्य, जिनमें से असल में कोई भी प्रजातंत्र नहीं था) से लड़ रहे थे।

पाठगत प्रश्न 25.3

1. याल्टा सम्मेलन में किस देश के भविष्य को लेकर चर्चा हुई?

2. 'लोहे का आवरण' नामक प्रसिद्ध शब्दावली किस नेता ने गढ़ी थी?

3. ट्रूमैन सिद्धांत का क्या उद्देश्य था?

4. नाटो का पूरा नाम क्या है?

25.4 शीतयुद्ध का दूसरा चरण : ट्रूमैन स्टालिन के बाद का युग

द्वितीय चरण में तनाव काफी कम हो गया था, लेकिन शीतयुद्ध का कोई अंत नहीं था। दोनों देशों के सर्वोच्च नेतृत्व में परिवर्तन हुआ। अमेरिका में सन् 1953 में ट्रूमैन के शासन का अंत हो गया और 1953 में ही सोवियत संघ में स्टालिन की मृत्यु हो गई। स्टालिन के बाद निकिता ख्रुश्चेव ने बागडोर संभाली, जिसने स्टालिन की अनेक नीतियों में बदलाव कर दिया। नीति के मोर्चों पर ख्रुश्चेव ने यूरोप में तनाव की नीति करने का पक्ष लिया

आपकी टिप्पणियाँ

और वहाँ की कुछ समस्याओं के लिए सोवियत संघ की जिम्मेवारी को स्वीकारा। दूसरी ओर उसने पोलैंड एवं हंगरी में सोवियत विरोधी नेताओं का सरेआम दमन किया और पोलैंड और हंगरी के राष्ट्रवाद की बात करने वाले उदारवादियों तथा कैथोलिकों की गतिविधियों को 'फासीवादी' कहकर उनकी निंदा की। सोवियत संघ के नेताओं ने इस दौरान अमेरिका में चल रहे जातीय संघर्ष पर भी तीखी टिप्पणियां की, जिसे वे पूंजीवादी असमानता के अपरिहार्य परिणाम बताते थे। बदले में अमेरिका एवं उसके मित्र राष्ट्रों ने पूर्वी यूरोपीय देशों में सोवियत संघ विरोधी भावनाएं भड़काने का प्रयास किया। सोवियत संघ में नेतृत्व परिवर्तन और ख्रुश्चेव द्वारा स्टालिनवाद की निंदा ने पोलैंड एवं हंगरी में विद्रोह को बढ़ावा दिया। सन् 1956 में पोलैंड के पोजनान शहर में विद्रोह हो गया, लेकिन उसे दबा दिया गया। पोलैंड का साम्यवादी दल दो धड़ों में बंट गया, जिनमें से एक स्टालिन के समर्थक थे तो दूसरे गोमुल्का के साथ थे। गोमुल्का के समर्थकों को सफलता मिली और पोलैंड की साम्यवादी पार्टी ने 'समाजवाद की तरफ एक राष्ट्रीय मार्ग' अपनाने का निर्णय लिया। इसका अर्थ था कि जब तक पोलैंड पूरे पूर्वी यूरोप में सोवियत संघ के नेतृत्व का सम्मान करता रहेगा, तब तक वह अपने मामलों (उदाहरण के लिए आर्थिक और सैनिक मामलों) पर ज्यादा नियंत्रण रख सकेगा। इस प्रकार यूगोस्लाविया के बाद पोलैंड राष्ट्रीय साम्यवाद के रास्ते पर चलने वाला दूसरा देश बन गया, जिसे अधिकतर सोवियत नेताओं ने सीमाओं के भीतर स्वीकृति प्रदान की।

1956 में हंगरी में लोग बगावत में खड़े हो गए। प्रारंभ में सोवियत संघ कुछ सुधार लाने के लिए सहमत हुआ, लेकिन जब हंगरी ने सोवियत सेना की पूर्ण वापसी की मांग करा दी और वारसा संधि (जिसे सोवियत संघ ने नाटो के जवाब में बनाया था) से पीछे हट गया तब इस 'नए कदम' से सोवियत संघ का नेतश्त्व नाराज हो गया। हंगरी द्वारा अंततः स्वयं को निरपेक्ष घोषित करने तथा वारसा संधि से अलग हो जाने के परिणामस्वरूप हंगरी के तत्कालीन शासक इम्रे नागी को मृत्युदंड दिया गया और सोवियत संघ ने हंगरी पर आक्रमण कर दिया। इस प्रकार सोवियत संघ ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह पोलैंड में उदारीकृत साम्यवादी शासन अथवा बहुदलीय प्रजातंत्र स्वीकार करने को तैयार नहीं। अमेरिका ने इस संबंध में कुछ नहीं किया, क्योंकि उसकी किसी कार्रवाई से सोवियत संघ और अमेरिका के बीच सीधी लड़ाई शुरू हो जाती।

चीनी क्रांति के बाद जनरल चियांग काई–शेक अपने समर्थकों को ताइवान जलडमरूमध्य के पार ले गया और वहाँ चीनी गणराज्य की स्थापना की, जो 1971 तक संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन का प्रतिनिधित्व करता रहा। 1950 से पहले अमेरिका की नीति यह थी कि साम्यवादी चीन (चीनी लोकतांत्रिक गणराज्य) के द्वारा ताइवान पर आक्रमण करने की स्थिति में वह हस्तक्षेप नहीं करेगा। लेकिन 1950 में कोरिया युद्ध के पश्चात् अमेरिका की नीति में बदलाव आया और 1953 के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति आइजनहावर ने ताइवान में भारी अमेरिकी सैन्य सशस्त्रीकरण को अनुमति दे दी।

1954 में चीनी लोकतांत्रिक गणराज्य (चीन) ने यह घोषणा कर दी कि ताइवान को स्वतंत्र कराया जाना है और सैन्य कार्रवाई प्रारंभ कर दी। अमेरिका ने इस पर परमाणु हथियार प्रयोग करने की धमकी दे दी और चीन व अमेरिका के बीच युद्ध अवश्यम्भावी लगने लगा। साम्यवादी चीन ने इस मामले में थोड़ा पीछे हटने का रुख दिखाया और नाटो देशों ने यह घोषणा कर दी कि वे अमेरिका द्वारा परमणु हथियारों के प्रयोग का

समर्थन नहीं करेंगे। इस अवधि के दौरान चीनी लोकतांत्रिक राज्य के नेताओं का विश्वास था कि परमाणु हथियारों को ले जाने वाली लंबी दूरी की सुपुर्दगी–प्रणाली (आईसीबीएम) की दिशा में सोवियत संघ द्वारा की गई उन्नति ने यूरोप का शक्ति संतुलन पूर्वी खेमे के पक्ष में कर दिया है। चीनी लोकतांत्रिक राज्य के नेताओं को यह मालूम न था कि रूस के सैन्य पुनरुत्थान का उनके लिए क्या मतलब है। शायद इससे अमेरिका द्वारा चीन को धमकाने की संभावना कम होगी। जब 1957 में चीन ने किमोत्र पर बमवर्षा की, तब रूस ने ही चीन पर रुकने का दबाव डाला था। अंततः चीन एवं रूस के बीच सीधा युद्ध होने से तो बच गया, लेकिन रूस एवं अमेरिका पर चीनी साम्यवादी संदेह और बढ़ गया।

19वीं सदी के मध्य में ब्रिटिश एवं फ्रांस ने मिलकर स्वेज नहर का निर्माण किया था। स्वेज नहर कंपनी के पास 1869 से लेकर 99 वर्ष की अवधि तक इस नहर का संचालन करने और उससे लाभ कमाने का अधिकार था। 1956 में मिस्र द्वारा स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण करने अर्थात् उसे मिस्र का राष्ट्रीय क्षेत्र बनाने के निर्णय ने संकटों की एक शृंखला पैदा कर दी। ब्रिटेन, फ्रांस और इजराइल ने मिस्र के विरुद्ध सुनियोजित सैन्य कार्रवाई शुरू करने का निर्णय लिया। अमेरिका सैन्य शक्ति के प्रयोग के खिलाफ था। लेकिन इजरायल ने ब्रिटेन एवं फ्रांस के साथ मिलकर मिस्र पर आक्रमण कर दिया। इससे अमेरिका को अपने ही मित्र राष्ट्रों की निंदा करने के लिए बाध्य होना पड़ा और शीतयुद्ध प्रारंभ होने के बाद पहली बार अमेरिका और रूस इस विषय पर साथ हो गए। ब्रिटेन और फ्रांस को नहर के लिए संयुक्त राष्ट्र शांति सेना स्वीकार करनी पड़ी। फ्रांस जिसने अभी तक अमेरिकी सुरक्षा खेमे से अलग रहने का प्रयास किया था, का शाही पतन 'स्वेज संकट' के बाद तेजी से बढ़ने लगा। ब्रिटेन भी अब सामान्यतः एक दोयम दर्जे की शक्ति और अमेरिका के एक कनिष्ठ पार्टनर मात्र के रूप में जाना जाने लगा था।

क्यूबा में अनेक वर्षों तक संघर्ष करने के बाद सन् 1959 में फिदेल कास्त्रो सत्ता में आए। कुछ ही वर्षों में वह क्यूबा को सोवियत संघ के निकट ले आया। अमेरिका ने क्यूबा के साथ कूटनीतिक संबंध काट लिए, क्यूबाई चीनी खरीदने से इनकार कर दिया और अमेरिका में निर्वासन में रह रहे कास्त्रो–विरोधी क्यूबाइयों द्वारा 1961 में क्यूबा पर किए गए 'हमले' का समर्थन किया। निर्वासित क्यूबाइयों ने पिग्स की खाड़ी में उतरने का प्रयास किया। यह 'आक्रमण' पूर्णतः असफल साबित हुआ, क्योंकि निर्वासितों को क्यूबा की जनता से कोई सहायता नहीं मिली। सोवियत संघ ने तब क्यूबा में एक परमाणु बमवर्षक और जमीन से जमीन पर मार करने वाली मिसाइल तैनात करने का निर्णय किया। (इनमें से कुछ तो अमेरिका से महज 150 कि.मी. दूरी पर तैनात थीं) सोवियत संघ ने दर्जनों लंबी दूरी तक मार करने वाली मिसाइलें भी क्यूबा भेजीं। टर्की एवं सीधे रूस की सीमा से (1949 से अमेरिका ने नार्वे से लगते अन्य स्थानों पर बमवर्षक और मिसाइल बेस बना लिए थे।) अमेरिका ने बदले में क्यूबा की नाकेबंदी करने की घोषणा कर दी। दोनों महाशक्तियों के बीच युद्ध होने की प्रबल संभावना थी। प्रारंभ में सोवियत संघ ने नाकेबंदी की निंदा की, लेकिन बाद में मिसाइलों को वापस लेने के लिए इस शर्त पर सहमत हो गया कि अमेरिका क्यूबा पर हमला नहीं करेगा और टर्की से अपनी मध्यम दूरी तक मार करनेवाली मिसाइलों को हटा लेगा। अमेरिका ने पहली शर्त मंजूर कर ली और फिर टर्की से अपनी मिसाइलें भी इस बहाने से वापस हटा लीं कि वे अब पुरानी हो चुकी हैं। यह संभवतः पहला अवसर था जब शीतयुद्ध के दौरान दोनों महाशक्तियां परमाणु–युद्ध के कगार पर पहुंच गई थीं।

आपकी टिप्पणियाँ

सोवियत संघ ने वास्तविक रूप में पश्चिमी शक्तियों को छह माह के अंदर बर्लिन का पूर्ण निःशस्त्रीकरण करने का अल्टीमेटम दे दिया और कहा कि यदि अन्य देश भी ऐसा करते हैं तो वह भी अपनी सेना को वापस बुला लेगा। यदि यह करार छह माह के भीतर पूरा नहीं किया जाता है तो सोवियत संघ पूर्वी बर्लिन में अपने अधिग्रहण–अधिकार के जर्मन प्रजातांत्रिक गणराज्य (पूर्वी जर्मनी) को देगा। जब सोवियत संघ की सेना ने शहर को चारों ओर से घेर लिया, तब पश्चिमी बर्लिन वासी एवं विदेशी अधिग्रहणकर्ताओं को एक 'हवाई पुल' उपलब्ध कराया गया। सोवियत नेताओं ने शीघ्र ही महसूस किया कि वे पश्चिमी ताकतों को आसानी से बर्लिन शहर से बाहर नहीं निकाल सकेंगे, जिसे अपने कब्जे में करने के लिए दूसरे विश्व युद्ध के दौरान उन्हें 3 लाख सैनिकों की बलि चढ़ानी पड़ी थी। बर्लिन संकट में विजय पाना पश्चिमी ताकतों के लिए आसान नहीं था।

1950 के दशक में बर्लिन के रास्ते से अनेक पेशेवर लोग जब पूर्वी जर्मनी से पश्चिमी जर्मनी की ओर पलायन करने लगे तो सोवियत संघ की चिंता बढ़ गई। जब उसने बर्लिन की स्थिति को लेकर पश्चिमी ताकतों पर दबाव बनाना शुरू किया तो उन्होंने अधिग्रहण की कुछ शर्तों में परिवर्तन कर दिया ताकि जर्मनी को लेकर किसी बड़े फसाद से बचा जा सके। 1955 के बाद पश्चिमी जर्मनी–जर्मन संघीय गणतंत्र का पुनः सैन्यीकरण किया जा रहा था और उसे अधिकतर पश्चिमी अधिग्रहण क्षेत्रों पर प्रभावी नियंत्रण दे दिया गया, जहां कुछ समय के लिए साम्यवादियों को निर्वासित कर दिया गया था। 1961 में सोवियत संघ ने पूर्वी जर्मनी से पश्चिमी जर्मनी की ओर पलायन करने वालों को रोकने के लिए एक कंक्रीट की दीवार बना दी। यह बर्लिन की दीवार तब तक शीतयुद्ध की राजनीति का प्रतीक बनी रही, जब तक इसे सन् 1989–90 में जर्मनवासियों ने नहीं तोड़ दिया। शीतयुद्ध के दूसरे चरण में दोनों महाशक्तियों के बीच तनाव कम होने लगा था, लेकिन कुछ अवसरों पर जैसे 1962 में क्यूबा को मिसाइल संकट में इन दोनों में तनाव काफी बढ़ जाता था। परमाणु–युद्ध की संभावना और उसके भयानक परिणाम दो ऐसे कारक थे, जिन्होंने दोनों महाशक्तियों को अपनी सोच बदलने के लिए बाध्य किया। दोनों ही देशों में सेना व्यय कम करने का दबाव बना।

दोनों महाशक्तियों के बीच संबंध सुधारने के लिए कुछ कदम उठाए जा चुके थे। 1963 में सोवियत संघ, अमेरिका और ब्रिटेन ने एक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि पर हस्ताक्षर किए थे और इस बात पर सहमति व्यक्त की थी कि अब परीक्षण जमीन के नीचे किए जाएँगे ताकि वातावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सके। उसी वर्ष (हाट लाइन) मॉस्को एवं वाशिंगटन के बीच (तथाकथित हॉटलाइन) एक टेलीफोन सेवा प्रारंभ की गई ताकि तत्काल संपर्क स्थापित करना सुनिश्चित किया जा सके।

पाठगत प्रश्न 25.4

1. किस सोवियत नेता ने यूरोप को लेकर तनाव घटाने और साथ ही सोवियत विरोधी नेताओं और विचारों का दमन भी करने की नीति अपनाई?

2. पीआरसी का पूरा नाम क्या है?

3. बर्लिन की दीवार कब गिरी?

25.5 तनाव में कमी

अब सोवियत संघ एवं अमेरिका के संबंधों ने एक नए चरण में प्रवेश किया, जिसे **डेटांट** यानी तनाव में कमी कहा जाता है। 'डेटांट' शब्द का प्रयोग पश्चिम एवं पूर्व के बीच तनाव में शिथिलता लाने के लिए किया गया। डेटांट में चीन को भी ध्यान में रखना जरूरी था। अमेरिका तथा चीन के रिश्तों में कई वर्षों से खटास चली आ रही थी। चीन के साथ तनाव–शैथिल्य एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। शीतयुद्ध इस अवधि के दौरान समाप्त नहीं हुआ, लेकिन आपसी समझ में काफी सुधार आया। अमेरिका के एक अधिकारी हेनरी किसिंजर ने डेटांट को विरोधी ताकतों के बीच सामंजस्य का तरीका बताया है। लियेनिड ब्रेझनेव जिसने क्यूबा के मिसाइल–संकट के बाद सोवियत नेता के रूप में ख्रुश्चेव से सत्ता हासिल की, के अनुसार डेटांट मतभेद एवं विवादों को ताकत, धमकियों एवं सैन्य शक्ति के प्रदर्शन से नहीं अपितु शांतिपूर्वक ढंग से आमने–सामने बैठकर सुलझाने की इच्छा बताया है। इसका अर्थ एक–दूसरे पर कुछ भरोसा करना तथा दूसरे के जायज हितों के बारे में सोचना भी है।' अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन को डेटांट का जनक कहा जाता है। लेकिन यह चीन–अमेरिका संबंधों के बारे में अधिक उपयुक्त है। यद्यपि निक्सन ने 1940–60 में अपने कैरियर की शुरुआत एक कट्टर साम्यवाद–विरोधी के रूप में की थी, लेकिन जब वे 1968 में राष्ट्रपति बने तो उन्होंने अमेरिका–चीन संबंधों को सुधारने के प्रयास किए।

दोनों ने तनाव कम करने की दिशा में अनेक कदम उठाए। 1968 में यू.के., यू.एस.ए. एवं यू.एस.एस.आर. के बीच एक परमाणु अप्रसार संधि हुई। दोनों महाशक्तियों के बीच झगड़े की मुख्य वजह थे जर्मनी एवं बर्लिन। 1969 में पश्चिमी जर्मनी 'ओस्टथपोलिटिक' की नीति प्रारंभ की, जिसका अर्थ है, 'पूर्व के लिए नीति'। पश्चिमी जर्मनी से पूर्वी यूरोपीय देशों के साथ सामान्य संबंध बनाए। दोनों जर्मनियों ने एक–दूसरे को मान्यता प्रदान की और महाशक्तियों ने इन्हें दो स्वतंत्र एवं विधिसम्मत अलग राज्यों के रूप में मान्यता दे दी। दोनों जर्मनी से 1973 में संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य बन गए। 1972 में अमेरिका एवं सोवियत संघ ने सामरिक परिसीमन संधि (साल्ट I) पर हस्ताक्षर किए। इस संधि में शस्त्रों की संख्या में कोई कटौती नहीं की गई, लेकिन इससे हथियारों की होड़ धीमी हो गई। सोवियत संघ एवं अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति (क्रमशः ब्रेझनेव और निक्सन) तीन बार मिले। अमेरिका ने सोवियत संघ को गेहूं निर्यात करना भी शुरू कर दिया। जुलाई 1975 में 35 देश हेलसिंकी (फिनलैंड) सम्मेलन के लिए इकट्ठे हुए। इसके अंतिम निर्णय पर हस्ताक्षर किए जाने के कुछ समय के लिए शीतयुद्ध की समाप्ति के रूप में देखा गया। इसके अंतिम निर्णय में दस सिद्धांत थे, जिनमें से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण यह था कि सभी देश यूरोप की सीमा को स्वीकार करेंगे, जो द्वितीय विश्व–युद्ध के बाद खींची गई थी। इस प्रकार जर्मनी के विभाजन को

आपकी टिप्पणियाँ

स्वीकृति मिल गई। साम्यवादी देशों ने अपनी जनता को भाषण की स्वतंत्रता एवं देश छोड़ने की स्वतंत्रता सहित 'मानवाधिकार' देने का वचन दिया।

डेटांट की अवधि के दौरान अमेरिका तथा चीन के संबंधों में काफी सुधार आया। राष्ट्रपति निक्सन एवं राज्य सचिव हेनरी किसिंजर ने चीन के साथ तनाव कम करने की दिशा में विशेष प्रयास किए। 1971 में चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ में शामिल कर लिया गया और ताइवान को निकाल दिया गया। 1978 में अमरिका ने राष्ट्रवादी चीन की मान्यता रद्द कर दी और 1979 में चीनी लोकतांत्रिक गणराज्य को मान्यता दे दी और दोनों ने एक–दूसरे के यहां राजदूत भेजे।

पाठगत प्रश्न 25.5

1. डेटांट क्या था? इसका जनक कौन था?

2. एनपीटी क्या थी?

3. साल्ट–I क्या था?

4. ऑस्टोपोलिटिक की नीति क्या थी?

25.6 नया शीत युद्ध

हेलसिंकी सम्मेलन के बाद तनाव शैथिल्य यानी डेटांट की प्रक्रिया का वेग धीमा पड़ गया। अमेरिका एवं सोवियत संघ के संबंध इतने खराब हो गए कि 1980 तक ऐसा लगने लगा कि शीतयुद्ध फिर से शुरू हो गया है। इस नए तनाव का उल्लेख नए शीतयुद्ध के रूप में किया गया। नया शीतयुद्ध पहले के शीतयुद्ध से इस अर्थ में अलग था कि यह वैचारिक मतभेदों के बजाय शक्ति–संतुलन पर आधारित था। नए शीतयुद्ध के दौर में एक नया शक्ति खेमा चीनी लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में सामने आया, जो ऐसी शक्ति के रूप में उभरा, जिसे न तो हराया जा सकता था और न ही जिसकी अनदेखी की जा सकती थी। 1979 में अफगानिस्तान में सोवियत सेना का दखल एक महत्त्वपूर्ण बिंदु था। नए शीतयुद्ध के दौरान दोनों ही देश अपने–अपने प्रभाव को, खासकर यूरोप से बाहर, बढ़ाने में जुट गए। यूरोप से बाहर चल रहे संघर्षों को इतनी अधिक महत्ता मिलने लगी, जितनी कभी नहीं मिली थी। सोवियत संघ के लिए डेटांट का अर्थ केवल यूरोप में यथास्थिति मंजूर करना था। भारत–चीन, अफ्रीका, अफगानिस्तान आदि में दोनों देशों ने विरोधी समूहों को समर्थन देना शुरू कर दिया। सोवियत संघ ने अफगानिस्तान के राष्ट्रपति को बदलकर अपनी पसंद का राष्ट्रपति बैठा दिया। लगभग 1,00,000 सोवियत सैनिक अफगानिस्तान में तैनात कर दिए गए। अमेरिका ने अफगानिस्तान में सोवियत सैनिकों की उपस्थिति को ईरान के लिए खतरा माना और अपने युद्धपोत खाड़ी में भेज

दिए। दोनों देश विनाशकारी हथियार बनाने की होड़ में जुटे थे। अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने स्ट्रेटेजिक डिफेंस इनीशियेटिव (एसडीआई) नामक एक नई हथियार–प्रणाली विकसित करने की योजना को मंजूरी दे दी, जो स्टार वार्स के रूप में भी जानी गई।

25.7 शीतयुद्ध का अंत

अनेक पूर्वी यूरोपियन देशों में साम्यवाद के समाप्त होने के साथ ही शीतयुद्ध का अंत हो गया। यह पतन बहुत तेजी से हुआ और अंततः साम्यवाद अपने जन्मस्थान सोवियत संघ से भी समाप्त हो गया। यह प्रक्रिया 1988 में पोलैंड में शुरू हुई, जब सॉलिडैरिटी ट्रेड यूनियन ने बड़ी–बड़ी सरकार–विरोधी हड़तालें प्रारंभ कर दीं, जिनसे सरकार को स्वतंत्र चुनाव करवाने पर मजबूर होना पड़ा, जिसमें साम्यवादियों की करारी हार हुई। यही स्थिति हंगरी, बुल्गेरिया, रोमानिया और चेकेस्लोवाकिया आदि में भी हुइ। पूर्वी जर्मनी में साम्यवादी नेता ऐरिक होनेफर ने प्रदर्शनकारियों को बल–प्रयोग करके खदेड़ना चाहा, लेकिन उसके साथियों ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। 1989 के अंत तक पूर्वी जर्मनी में साम्यवादी सरकार को हटाना पड़ा और शीतयुद्ध की प्रतीक की दीवार को जनता ने जोश में आकर 1989 में तोड़ दिया। जिस प्रकार से बर्लिन की दीवार के बनने को शीतयुद्ध की शुरुआत के रूप में देखा जाता है, वैसे ही इसके टूटने को शीतयुद्ध की समाप्ति के रूप में देखा गया। 1990 में पूर्वी जर्मनी में पश्चिमी जर्मनी की मुद्रा को चलाया गया और अंततः दोनों जर्मनी पुनः एक हो गए। जर्मनी संघीय गणराज्य के चांसलर को एकीकृत देश की सरकार का मुखिया चुना गया और जिसने बाजार–आधारित अर्थव्यवस्था एवं पश्चिमी देशों जैसे प्रजातंत्र को अपनाया।

सोवियत संघ में भी साम्यवाद खत्म हो गया। मिसाइल गोर्वचेव ने अपनी ग्लासनॉस्त (खुलापन) एवं प्रेसट्रोइका (पुनर्निर्माण) जिसका अर्थ है आर्थिक एवं सामाजिक सुधार जैसी नीतियों से देश को पुनः मजबूत करने के अनेक प्रयास किए। लेकिन ये उपाय सफल नहीं हुए और 1991 तक सोवियत संघ अलग–अलग गणराज्यों में बंट गया और अब रूस का वह पुराना रुतबा नहीं रह गया। जो सोवियत संघ का हुआ करता था। शीतयुद्ध का अंत हो गया। अनेक राजनीतिक टिप्पणीकारों ने दलीलें दीं कि शीतयुद्ध के अंत के साथ ही विश्व की सभी समस्याएं समाप्त हो जाएंगी, लेकिन अब नई समस्याएं और संघर्ष के नए क्षेत्र उभर आए हैं।

पाठगत प्रश्न 25.6

1. एसडीआई क्या थी?

2. ग्लॉसनॉस्त एवं पेरेस्ट्रोइका क्या थे?

3. शीतयुद्ध की समाप्ति का प्रतीक कौन–सा था?

आपकी टिप्पणियाँ

आपने क्या सीखा

द्वितीय विश्व युद्ध के फौरन बाद शीतयुद्ध प्रारंभ हो गया था, यद्यपि इसके संकेत युद्ध के दौरान ही मिलने लगे थे। शीतयुद्ध के प्रारंभिक दौर में, अमेरिका तथा रूस दोनों ने अपने प्रभाव और विचारधारा को बढ़ाने के प्रयास किए। इन दोनों के बीच संदेह एवं अविश्वास था। दूसरे चरण में दोनों देशों के बीच तनाव में कुछ कमी आई। यद्यपि संदेह एवं अविश्वास अभी भी बना हुआ था। डेटांट के तुरंत बाद नया शीतयुद्ध प्रारंभ हो गया। इस अवधि में एक नया शक्ति खेमा चीनी लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में उभर कर आया। पूर्वी यूरोपीय देशों तथा रूस में साम्यवाद की समाप्ति के बाद ही शीतयुद्ध समाप्त हुआ।

पाठांत प्रश्न

1. शीतयुद्ध से आप क्या समझते हैं? यह खुले युद्ध से किस प्रकार अलग था?
2. शीतयुद्ध के लिए जिम्मेदार कुछ कारकों का उल्लेख कीजिए।
3. शीतयुद्ध के पहले चरण के दौरान पोलैंड के मुद्दे पर चर्चा करें।
4. बर्लिन नाकाबंदी का क्या अर्थ है?
5. शीतयुद्ध के दूसरे चरण के दौरान स्वेज नहर की संकट पर चर्चा करें।
6. शीतयुद्ध में डेटांट के चरण का वर्णन करें।
7. नया शीतयुद्ध क्या है? यह शीतयुद्ध से किस रूप में अलग था?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

25.1

1. राजनीतिक एवं आर्थिक उदारीकरण और मार्क्सवाद–लेनिनवाद।
2. वॉइस ऑफ अमेरिका और रेडियो मॉस्को

25.2

1. 25.2 का तीसरा पैरा देखें।
2. 25.2 का तीसरा पैरा देखें।
3. 25.2 का अंतिम से पहला पैरा देखें। पूर्वी यूरोप सोवियत संघ द्वारा, पश्चिमी यूरोप अमेरिका द्वारा।

25.3

1. पोलैंड

2. चर्चिल
3. अवरोध नियंत्रण में करना
4. नार्थ एटलांटिक ट्रीटी आर्गेनाइजेशन

25.4

1. निकिता खुश्चेव
2. लोकतांत्रिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना यानी चीनी लोकतांत्रिक गणराज्य।
3. 1989–90

25.5

1. 'डेटांट' पूर्व–पश्चिम संघर्ष में कमी के लिए प्रयुक्त शब्द है। अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन इसके जनक थे।
2. न्यूक्लियर नॉन–प्रोलिफरेशन ट्रीटी यानी परमाणु अप्रसार संधि।
3. स्ट्रेटेजिक आर्म्स लिमिटेशन ट्रीटी–I यानी रणनीतिक शस्त्र परिसीमित संधि– I
4. पश्चिमी जर्मनी की नीति, जिसका मतलब था 'पूर्व के लिए नीति'।

25.6

1. स्ट्रेटेजिक डिफेंस इनिशियेटिव यानी रणनीतिक रक्षा पहल
2. खुलापन एवं पुनर्निर्माण
3. बर्लिन की दीवार का गिरना।

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

1. देखें 25.1
2. देखें 25.2
3. देखें 25.3 अनुच्छेद 2
4. देखें 25.3 अनुच्छेद 5
5. देखे 25.4 अनुच्छेद 6
6. देखें 25.5
7. देखें 25.6

शब्दावली

कॉमिनफॉर्म – साम्यवादी सूचना ब्यूरो। सोवियत संघ ने 1947 में इसकी स्थापना की। अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी एकता को बढ़ावा देना इसका उद्देश्य था।

अस्थिविकास चरण – 1945–47 के बीच शीतयुद्ध का प्रारंभिक चरण। इस चरण के बाद शीतयुद्ध सघन हो गया।

लौह आवरण – इस शब्द का निर्माण ब्रिटिश प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल द्वारा किया गया था। चर्चिल ने इसका प्रयोग बाल्कन राज्यों की स्थिति का विवरण देने के लिए किया था, जहाँ पर ग्रीस को छोड़कर सभी देश रूस के आधिपत्य मे आ गए थे।

बर्लिन नाकाबंदी – सोवियत संघ द्वारा बर्लिन पर लगाया गया प्रतिबंध, जिसके द्वारा उसने पश्चिमी क्षेत्रों से उसका संपर्क तोड़ दिया। पश्चिमी मित्र जर्मनी में मौद्रिक सुधार लाना चाहते थे।

ब्रसेल्स संधि – इस संधि के माध्यम से ब्रिटेन, फ्रांस और बेल्जियम ने जर्मनी के विरुद्ध एक साझा रक्षा समझौता किया था। लेकिन यह संधि मूलतः सोवियत संघ के विरुद्ध थी न कि जर्मनी के।

ट्रूमैन सिद्धांत – ट्रूमैन सिद्धांत एक अवरोध की नीति थी, जिसका उद्देश्य साम्यवाद को उन क्षेत्रों में सीमित या अवरुद्ध करना था, जहाँ उसने जड़ें जमा ली थीं।

मार्शल योजना – इस योजना में युद्ध की क्षति से उबरने के लिए अमेरिका द्वारा 20 वर्ष की अवधि में यूरोपीय देशों को 10 बिलियन डॉलर से अधिक धन देने का प्रावधान था।

नाटो – नार्थ अटलांटिक ट्रीटी आर्गेनाइजेशन, जिसका गठन अमेरिका तथा कुछ यूरोपीय देशों ने मिलकर किया था। यह सोवियत खेमे के खिलाफ सैन्य गठबंधन था।

डेटांट – पूर्व एवं पश्चिम के बीच तनाव कम होने के लिए प्रयुक्त शब्द। डेटांट की अवधि के दौरान दोनों महाशक्तियों के बीच संबंधों में पर्याप्त सुधार आया। इस दौरान चीन के साथ भी अमेरिका के संबंधों में सुधार आया।

साल्ट–I – स्ट्रेटेजिक आर्म्स लिमिटेशन ट्रीटी यानी रणनीतिक शस्त्र परिसीमित संधि, जो अमेरिका एवं सोवियत संघ के बीच पारित हुई। इससे शस्त्रों की दौड़ धीमी हो गई।

एसडीआई – स्ट्रेटेजिक डिफेंस इनिशियेटिव यानी रणनीतिक रक्षा पहल, जिसे स्टार वार के नाम से भी जाना जाता है। इससे विनाश के और नए हथियारों का विकास होने लगा।

आपकी टिप्पणियाँ

ग्लासनॉस्त – इस नीति का मतलब था खुलापन। इसे सोवियत संघ के राष्ट्रपति मिसाइल गोर्वाचेव ने प्रारंभ किया था। इसका उद्देश्य था देश को रूपांतरित करना और पुनः मजबूत बनाना।

पेरेस्ट्रोइका – सोवियत संघ के राष्ट्रपति मिखाइल गोर्वाचेव द्वारा शुरू की गई नीति जिसका उद्देश्य था आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों का पुनर्गठन करना।

ऑस्टपोलिटिक – इस नीति की शुरुआत पश्चिमी जर्मनी की सरकार ने की, जिसका अर्थ था 'पूर्व के लिए नीति'। पश्चिमी जर्मनी ने पूर्वी यूरोपीय देशों के साथ सामान्य संबंध बहाल कर लिए और दोनों जर्मनियों ने एक दायरे को मान्यता दे दी और साथ ही महाशक्तियों ने भी इन्हें स्वतंत्र और वैध राष्ट्रों का दर्जा प्रदान कर दिया।